International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 10, October 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

'दलित' भाब्द की व्युत्पत्ति, अर्थ एवं स्वरूप

डॉ० रेनू रानी सिंह
एसो० प्रो० एवं विभागाध्यक्ष 'हिन्दी'
के.बी. पी. जी. कालेज, मीरजापुर (उ०प्र०)

'दलित' मानव समुदाय का ऐसा अंग है जिसको समुदाय के अन्य लोगों ने दबाया है, सताया है और यहां तक कि अमानवीय कार्य करने के लिये बाध्य भी किया है। दलित भाब्द आधुनिक है लेकिन 'दलितपन' सदियों से रहा है। इस तरह व्युत्पत्ति के आधार पर इसका सही अर्थ तथा वास्तविक व्याप्ति को जानना आव यक हो जाता है। दलित भाब्द की व्युत्पत्तिसंस्कृत के 'दल' धातु से हुई है जिसका अर्थ तोड़ना, हिस्से करना कुचलना है...

"भत्ते भंकुभ दले न भुपि सवि ुरा:।"[१]

संस्कृत भाब्द को ा में भी दलित के अर्थ मिलते हैं। जैसे-

दलित- (सं० वि०) दल+त=टूटा हुआ, कटा हुआ, पिसा हुआ चिरा हुआ, खुला हुआ, फैला हुआ।[२]

दल-चूर-चूर करना फाड़ देना।

दलित- दला गया, मर्दित, पीसा गया।[3]

प्राकृत भाब्द को ा में दलित का क्रियात्मक अर्थ ही मिलता है-

दल्- (अक) विकसना, फटना, खण्डित होना, दिधा होना।

दल- (सक) चूर्ण करना, टुकड़े करना।

दल्- (न पुं०) सैन्य, ल कर, पत्र पत्ती।[४]

दल- (दलित, दलित) दलित-टू वर्स्ट, ओपन स्प्लिर क्लेव क्रंक।

दलित-हृदय गोठें द्वेंग द्विधा तुन विद्यते, वेदनाओं के कारण हृदय के टुकड़े होते हैं ना ा नहीं।

दलित-पी.जी.-ब्रोकन, टार्च, बर्स्ट रेण्ट, स्थिलर।[५]

हिन्दी भाब्द को ों में ये अर्थ मिलते हैं-

दलित-

१. कुचला हुआ, मर्दित, मसला हुआ, रौंदा हुआ।

२. पस्त हिम्मत, हतोत्साह

३. अछूत, जनजाति, डिप्रेस्ड क्लास।[६]

हिन्दी संस्कृत भाब्द को ा दलित का अर्थ इस तरह दिया है-

दलित- वि० (संस्कृत) १- खण्डित, चूर्णित, मर्कट
२- अस्पृ य, अन्त्यज
३- नसित, ध्वंसित
संस्कृत पुलिंग ४- नीच, हरिजन [७]
दलित संस्कृत दल+क्त

जिसका दलन हुआ हो जो कुचला, रौंदा मसला गया हो, जो दबाया गया हो अथवा उसे पनपने या

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 10, October 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बढ़ने न दिया गया हो।[८]

दलित- (दल+क्त) - १- टूटा हुआ, चीरा हुआ, फाड़ा हुआ, फटा हुआ, टुकड़े-टुकड़े हुआ।
२- खुला हुआ, फैलाया हुआ।[९]

उच्चतर हिन्दी को I में दलित भाब्द का अर्थ 'डाउन ट्रोडन' दिया गया है। [१०]

दलित- हरिजन, अस्पृ य जातियां।[११]

मानक अंग्रेजी हिन्दी को I में दलित का अर्थ इस प्रकार मिलता है-

दलित- डिप्रेस्ड, दबाना, नीचा करना, झुकना, विनती करना, नीचे लाना, स्वर नीचे करना, धीमा करना, म्लान करना, दिल तोड़ना।

दलित वर्ग- नीची जातियों के लोग अछूत, हरिजन, पीड़ित, दबाए हुए, पद दलित, कुचले सताए हुए लोग।[१२]

मानक हिन्दी अंग्रेजी को I- राममूर्ति सिंह में दलित भाब्द के लिये डिप्रेस्ड भाब्द दिया गया है और दलित वर्ग के लिये डिप्रेस्ड क्लास आक्सफोर्ड डिक ानरी में दलित का अर्थ डिप्रेस्ड प्रायः नीची जातियों के अछूत वर्ग से किया गया है।[१३]

संस्कृत और अंग्रेजी भाब्द को ों की तरह हिन्दी भाब्द को ों में भी दलित का अर्थ कुछ वैसा ही मिलता है जैसे-

दलित- मसला हुआ, मर्दित दबाया हुआ, रौंदा हुआ, खण्डित, विनिश्ठ किया हुआ।[१४]

दलित- जिसका दलन हुआ हो अथवा जिसे पनपनें या बढ़ने न दिया गया हो ध्वस्त या नश्ट किया हुआ।

हिन्दी भाब्द को ों की तरह मराठी भाब्द को ों में भी दलित अर्थ विनिश्ठ किया हुआ ही मिलता है।

दल- ना I करणे (विनिश्ठ हुए)।

दलित- ना ापावलेला (विनिश्ठ हुआ)।

दीन दलित- समानार्थी भाब्द।[१५]

दलित- (सं० वि०) तुडविलेले, चुरउलेले, मोडलेले अंग्रेजी डिप्रेस्ड क्लासेज या भाब्दास प्रति ाब्द।[१६]

अवंतिका प्रसाद मरमट दलित भाब्द को व्याख्यायित करते हुए इस निश्कर्श पर पहुंचते हैं-

1. समाज में प्रचलित धारणाओं के अनुसार तथा भाब्द को ों के अनुसार दलित वह लोग हैं, जिनका दलन किया गया हो।
2. आदिकाल से मान विभिन्न दलों में विभक्त था, जिन्हें समूह, टोली, टुकड़ी, गिरोह, जत्था के पर्यायवाची नामों से भी जाना गया था।
3. दलित भाब्द में हमें दल संज्ञा का आभास अधिक दृश्टिगत होता है और हमारी धारणा है कि दल से ही दलित भाब्द बना और प्रचलन में आया।
4. वर्तमान में अनेकों सामाजिक इकाईयों और राजनीतिक पार्टियों की विचार धारा के लोग एक सूत्र में बंधकर चुनाव लड़ते हैं या संस्था बनाते हैं। उसमें भी दल भाब्द का महत्व दिखाई देता है। जैसे- जनता दल, समाजवादी-दल, सेवादल, लोकदल ठीक यही धारणा दल से बने दलित भाब्द में निहित है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 10, October 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

5. दलित भाब्द दल से बना है और दल नामक सर्प है तथा बहुत से दलों का संगठित नाम दलित भाब्द निहित है।
6. दलित भाब्द १९वीं भादी के सुधारवादी आन्दोलनों की देन है। इस सदी के सुधारवादी नेता कार्यकर्ता श्रीमती ऐनी बेसेन्ट ने सर्वप्रथम भोशितों, पीड़ितों के लिये डिप्रेस्ड भाब्द का प्रयोग किया। भाब्द को ों में इस भाब्द का पर्याय रूपान्तरण दलित है।[१८] श्रीमती ऐनी बेसेन्ट मानती थी कि अछूत समस्या का कोई धार्मिक आधार नहीं है। इनके प्रति किया जाने वाला व्यवहार सामाजिक है। इनकी वास्वतविक समस्या, सफाई, स्वास्थ्य एवं ि ाक्षा हैं। इससे निजात दिलाकर उनकों अपने अधिकारों के प्रति सजग किया जा सकता है। इस प्रकार अछूतों की समस्या की जड़ गरीबी गंदगी और अि ाक्षा है न कि धर्म, इसी कारण ये दोयम दर्जे के नागरिक के रूप में समाज में रहते हैं। श्रीमती बेसेंट के साथ विवेकानन्द और रानाडे ने भी इस भाब्द की इसी संदर्भ में कई बार प्रयोग किया है।

प्राचीन काल में दलितों के लिये भूाद्र अति भूाद्र, चाण्डाल, अछूत अन्त्यज, अस्पृ य आदि भाब्दों का प्रयोग किया गया है। यद्यपि प्रारम्भ में भूाद्रों के पर्याप्त सामाजिक अधिकार थे पर बाद में उसे अस्पृ य अछूत बना दिया गया।

१९वीं और २०वीं सदी के सुधारवादी आन्दोलनों पर मानवतावादी आन्दोलनों ने इनकी सामाजिक समानता दिलाने का अथक प्रयास किया पर यह समाज का कोढ़ समाप्त नहीं हुआ हालांकि उन्हें हरिजन (हरि का जन) भी कहा गया। इसका समाज पर कोढ़ समाप्त नहीं हुआ हालांकि उन्हें हरिजन (हरि का जन) भी कहा गया। इसका समाज पर कोई वि ोश प्रभाव नहीं पड़ा और ये समाज से 'बहिश्कृत' ही रहे। मद्रास में भूाद्रों को पंचम कहा जाता हैं। इन्हीं पंचमों (ूाद्रों) को विवेकानन्द ने दलित वर्ग कहा है। आरम्भ में दलित वर्ग के अन्तर्गत केवल अस्पृ य वर्ग ही नहीं अपितु सामाजिक रूप से अविकसित, पीड़ित, भोशित, निम्न जातियों के वर्गों की गणना होती है आज स्थिति बदल गयी है। दलित चेतना के कारण दलित वर्ग में सामाजिक कृति से उत्पन्न हुई है। सर्वप्रथम फ्रेंच भाशा फिर अंग्रेजी भाब्द 'डिप्रेस्ड' का उपयोग सरकारी भाशा में इसी वर्ग के लिये किया था जिसका हिन्दी रूपान्तरण दलित भाब्द के रूप में आया। सरकारी भाशा में 'डिप्रेस्ड क्लासेज' का रूपान्तरण दलित वर्ग अंगीकृत किया गया।[१९] ब्रिटि ा सरकार के भासन के दौरान मंटिग्यू, चेम्सफोर्ड रिफार्मस द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर दलित वर्गों के लिये अनेक सरकारी निकायों में प्रतिनिधित्व प्रदान किया गया तथा उसी अनुरूप १९१९ में सरकारी भाशा में दलित वर्ग, सर्वग्राही भाब्द बन गया। इसमें अनुसूचित जातियां अनु० जन जाति तथा अन्य पिछड़े वर्ग के लोग भामिल थे।

आधुनिक भूाद्र समाज का बहुत बड़ा हिस्सा दलित संज्ञा में समाविश्ट है आधुनिक संदर्भों में देखते हुए अलग-अलग परिभाशाएं दी है। दलित भाब्द को परिभाशित करते हुए ओम प्रका ा वाल्मीकि कहते हैं- "दलित भाब्द भाशावाद जातिवाद और क्षेत्रवाद को नकारता है और पूरे दे ा को एक सूत्र में पिरोने का कार्य करता है।"[२०] समता के लिये संघर्शरत् लोग ही दलित वर्ग के अन्तर्गत आते हैं समता के अस्मिता द ाी प्रगति ाील समाज के लिये संघर्श ाील लोग ही दलित हैं। आज पिछड़े वर्ग अनुसूचित जाति, अनुसूचित जन जाति ही अपनी अस्मिता के लिये संघर्शरत है। अखिल भारतीय दलित-साहित्य अकादमी के अध्यक्ष ने भी दलित को परिभाशित करते हुए इसमें उपेक्षित,

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 10, October 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

पीड़ित, नारी, बच्चों को भी भामिल किया है। उन्होंने इस परिभाशा में एक विस्तृत वर्ग को लिया है उनका कहना है कि-

1. दलित भाब्द व्यक्ति का अपनी अस्मिता, स्वाभिमान और अपने गौरवमयी, इतिहास पर दृश्टिपात करने को बाध्य करता है। वहीं पर अवगति वर्तमान स्थिति तिरस्कृत जीवन के विशय जीवन के विशय में सोचने के लिये विव I करता है।
2. दलित भाब्द मूक नहीं है। यह अपनी परिभाशा स्वयं उद्भाशित करता है।
3. दलित वह है-जिसका दलन किया गया हो, भोशण किया गया हो उत्पीड़न किया गया हो।
4. उपेक्षित अपमानित, प्रताड़ित, बाधित और पीड़ित व्यक्ति भी दलित की श्रेणी में आते हैं।
5. दलित के अन्तर्गत जहां सदियों से सामाजिक वर्ण-व्यवस्था और जातिवाद से अभि ाप्त, दलित, भोशित उपेक्षित अपमानित, भोशित, सामाजिक, बंधनों से बधित नारी बधित नारी एवं बच्चे भी इस श्रेणी में आते हैं।
6. भूमिहीन, अछूत, गुलाम और निराश्रित भी दलित है।
7. दलित भाब्द सामाजिक असमानता की ओर इंगित करता है, जैसे डील-डौल वाले, एक जैसे भाक्ति वाले लोगों में परस्पर ऊंच-नीच बड़े-छोटे की भावना क्यों है। एक व्यक्ति से छुआ-छूत का भेद क्यों करता है।
8. दलित भाब्द आज प्रेरणा और विद्रोह का पर्यायवाची भी है। दलितों के गौरवमयी अतीत द ाता हो वहीं वह उन्हें सामाजिक आज़ादी, समानता और सम्मान के लिये प्रेरित करता है। वह उन भाक्तियों के विरूद्ध खुला विद्रोह करने की भी प्रेरणा देता है। जिन्होंने झूठे सामाजिक नियमों में बांध करके न केवल उनकी विवेक भाक्ति को नकारा बना दिया बल्कि उनके सोच को भी सदैव के लिये गुलाम बनाकर रखा।
9. दलित भाब्द उन बेजुबानों की आवाज़ है जिनकी जुबान वेद-मंत्र सुनने पर उबलता हुआ भी II उड़ेल दिया गया। उन लोगों के हाथ है जिन्हें समानता के अधिकार मांगने के अपराध में काट दिया गया और उन लोगों के पांत है। जिन्हें न्याय की याचना करने के लिये बढ़ने पर कलम कर दिया गया।
10. दलित भाब्द आक्रो I चीख, वेदना, पीड़ा, चुभन, घुटन, छटपटाहट का प्रतीक है। यह उन लोगों की ओर संकेत करता है जो अमानुशिक सामाजिक व्यवस्थाओं में बंधे अन्य की प्रताड़ना सहते, चीखते-चिल्लाते रहे पर उनकी वेदना, पीड़ा, चुभन, घुटन और छटपटाहट को अनदेखा कर मनुस्मृति की जालिम न्याय प्रणाली की दुहाई देकर उल्टे उनके रिसते घावों पर नमक मिर्च छिड़का गया, वो और भी छटपटाएं। धीरे-धीरे भाग्य भगवान, विधि का विधान मानकर वे कुण्ठित होकर बैठ गये उन लोगों के प्रतिनिधि हैं जो सदियों से बधुआ बने नारकीय जीवन जीते रहे, खून के आंसू पी बेबसी में बेगार करते रहे, मां बेटियों की अस्मिता से खिलवाड़ करते देखकर भी अपने आक्रो I को रोके रखे। हर क्षण कदम-कदम पर अत्याचार, अपमान, तिरस्कार सहते सहते हुए सब्र का घूंट पीते रहे।
11. दलित भाब्द एक इतिहास है सामाजिक दर्पण है सर्वहाराओं की चीत्कार है अस्मत, अस्मिता, असमानता और अनाचार विवेचक है यह भोशकों, दुराचारियों अन्यायियों के कुकर्मों का पर्दाफा I करके जहां दलितों, पीड़ितों और दासों तथा पराधीनों को इनमें स्वतंत्र होने

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 10, October 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

का आह्वाहन करता है। वहीं उन्हें समता और सम्मान के साथ दुखी और समृद्ध जीवन जीने के लिये प्रेरित भी करता है। इस तरह दलित भाब्द सच्चा पथ-प्रद ाक ही नहीं अपितु सच्चा नेता है। जो अवनति से प्रगति की ओर ले जाता है और निर्जीवता में सजीवता का संचार करता है।

नाग और नागवं ा के वि ोशज्ञ का मानना है किसी जाति के दले जाने पर, रौदें जाने पर, गिराये जाने पर जाति का नामकरण नहीं होता, क्रिया से जातिकरण का नाम पूर्णतया मान्य एवं साक्ष्य भी नहीं हैं। ''इस तरह दलित भाब्द 'दल' से बना है और दल नामक सर्प है तथा बहुत से दलों का एक संगठित नाम दलित भाब्द पहले समूह के अर्थ में निहित है''[२२]

रत्न कुमार साम्भरिया के अनुसार ''दलित भाब्द का भााब्दिक अर्थ है दबा हुआ आत्मसम्मान, आत्मवि वास का जिसमें अभाव हो, मनोबल की कमी हो, अपमान भोाशण, उत्पीड़न और प्रताड़ना को जिसने अपनी नियति मान लिया हो''।[२३]

मेजर मधुकर भोण्डे भूद्रों के एक बड़े हिस्से को दलित कहने से नाराज होते हैं, उनका कहना है कि ''दलित का अर्थ भाब्दको ाों में जो मिलता है इसका अर्थ पतन होता है। उनका आगे कहना है कि युग पुरूश बाबा साहेब अम्बेडकर ने भी इसका अर्थ गुलाम ही लगाया है। इस तरह दलितों को परिभाशित करते समय वे उसे 'अस्पृ य' कहना ज्यादा पसंद करते हैं और अस्पृ यता का अर्थ वे श्रेश्ठ बताते हैं''।[२४]

वर श्री भोण्डे का मानना है कि अस्पृ यता का अर्थ श्रेश्ठता से नहीं बल्कि हीनता से लेना चाहिए। मानवतावादी कमले वर-दलितों को दलित कहने पर आपत्ति व्यक्त करते हैं वे उसे मनुश्य के रूप में ही देखते हैं, उनका कहना है कि ''दलित भाब्द को मैं जानबूझकर बार-बार इस्तेमाल करना नहीं चाहता क्योंकि दलित से एक अलग तरह का संस्कार सा दिखाई पड़ता है। इसलिये मैं उसको दलित के रूप में नहीं मनुश्य के रूप में मंजूर कहना चाहूंगा।''[२५]

दलित भाब्द की ऐतिहासिक विकास यात्रा को स्वीकार करते हुए श्री एस० पी० पुणालेकर नामदेव रसाल ''दलित'' उसे मानते हैं। जो अछूत आदिवासी, पिछड़ी जातियों बौद्ध, कश्ट उठाने वाला जनता, भूमिहीन मजदूर, गरीब किसान, खाना बदो ा जातियां हैं तथा जिसे गांधी जी ने हरिजन कहा है- पर इनके मतों में द्वन्द्व दिखाई पड़ता है, एक तरफ से पिछड़ी जातियां, कश्ट उठाने वाली भूमिहीन मजदूर, गरीब किसान को दलित में भाामिल करते हैं जिसमें सवर्ण समाज के लोग भी आते हैं तो दूसरी तरफ गांधी जी ने हरिजन कहा है- उसमें अछूत-अपृ य जातियां ही आती हैं इस तरह इन लोगों की यह मान्यता भ्रामक लगती है। दलित को केवल जातीयता तक सीमित न रखने वाले विद्वानों की संख्या कम नहीं हैं। विद्वानों एवं विचारकों का मानना है कि दलित भाब्द के माध्यम से अनेक प्रकार की अभिव्यक्ति होती है पर मात्र जन्म के आधार पर जिसको समाज में एक ही प्रकार जीवन मिला हो मनुश्य के रूप में जिनके मूल्यों को नकारा गया हो जिनके अधिकारों को ठुकराया गया है।[२६]

''दलित पैन्थर्स'' अपने घोाणा पत्र में दलित को इस प्रकार परिभाशित करता हैं। दलित का अर्थ है अनु० जाति, बौद्ध कामगार, भूमिहीन मजदूर, गरीब किसान, खानाबदो ा जातियां, आदिवासी और नारी समाज भी भाामिल है[२७] पर इस बात से पूरे तौर पर सहमत नहीं हुआ जा सकता क्योंकि गरीब, ब्राह्मण कभी अपने को दलित नहीं कहता, न ही संविधान निर्माताओं---- जिनमें ज्यादातर

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 10, October 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

स्पृ य थे---- ने 'स्पृ य' जाति को आर्थिक दृश्टि से पिछड़ों को अनुसूचित जाति में भाामिल किया सभी गरीब मजदूरों को दलित मानने के सम्बन्ध में एक महत्वपूर्ण बात यह है कि ब्रिटि ा भासन काल में ऐसी जातियों की एक सूची बनायी गयी थी, जो अस्पृ य थी तथा अपृ यता के कारण सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, भौक्षिक सभी तरह से समाज में बहुत पिछड़ी थी। भारत सरकार अधिनियम १९३५ और उसके बाद स्वतंत्र भारत के सविधान में भी इन जातियों को अनुसूचित जाति कहा गया। इन्हें अस्पृ य जातियों को गांधीजी ने हरिजन कहा था और अम्बेडकर ने 'दलित'। भारत सरकार अधिनियम या भारतीय संविधान को पारित कराने वाले तथा इन जातियों की सुनि चित या भारतीय संविधान को पारित कराने वाले तथा इन जातियों की सुनि चित पहचान करने वाले अधिकां ा सदस्य सवर्ण हिन्दु थे। प्र न उठता है कि क्यों नहीं स्पृ य जातियों के आर्थिक रूपों से पिछड़ों को भी अनुसूचित जाति में भाामिल किया गया और गांधीजी ने 'हरिजन' कहा तो क्यों नहीं गरीब सवर्ण को 'हरिजन' कहा गया। न तो गरीब सवर्णों ने दावा किया कि हम भी 'हरिजन' है। डॉ० अम्बेडकर ने इन जातियों को 'दलित' कहा तब भी किसी गरीब सवर्ण ने अपने को दलित नहीं कहा। ५० साल बाद समस्त गरीब मजदूरों को दलित कहे जाने की वकालत की जा रही है।

सभी सवर्ण महिलाएं अपने आपको दलित कहे जाने का विरोध करती हैं। इसी तरह पिछड़ी जातियों और अल्पसंख्याकों को भी दलित वर्ग की परिधि में भाामिल नहीं किया जा सकता क्योंकि वे वर्ण-व्यवस्था से बाहर नहीं है और वर्ण-व्यवस्था से बाहर के लोग ही दलित हैं, अल्पसंख्यकों को तो हिन्दुत्व की परिधि में भाामिल नहीं किया जा सकता है।

भारतीय संदर्भ में दलित भाब्द एक जाति बोधात्मक भाब्द के रूप में व्यहत हो रहा है, जैसे------- आदिवासियों, जनजाति, अनुसूचित जातियों के रूप में। क्योंकि हम अपने वर्ग, श्रमिक, मजदूर, किसान, हलवाहा, आदिवासी के नाम पर ऐसी जातियों का आधार बताने आये हैं, जो वर्ण-व्यवस्था के कोख से पैदा हुए हैं।

हमारे यहां दलित एक जन्मजात जाति बोधक संज्ञा है जो विद्रोह का कारण बना। 'दलित' भाब्द में मनुश्य का संवेदना है, उसके दुखान्त है, उसके अपने कुण्ठाग्रस्त नैरा ाय हैं, और भाास्त्र के बल पर सदियों से दबाये गये का उत्पीड़न प्रताड़ना एवं उपेक्षा, अवमानना से मुक्ति का अहसास-----वैचारिक विद्रोह तथा संघर्श है।[२८]

विद्वजन केवल मजदूर, किसान भोशित और मुसलमानों को ही नहीं बल्कि आर्थिक दृश्टि से कमजोर सवर्णों को भी दलित वर्ग में भाामिल करते हैं वे दलित को परिभाशित करते हुए कहते हैं "दलित का भाब्दिक अर्थ है जिसका दलन या उत्पीड़न किया गया हो उत्पीड़न चाहे भास्त्र द्वारा या भास्त्र से किया गया हो। इसलिये इस भाब्द की सीमा में केवल भूद्र ही नहीं आते बल्कि स्त्री एवं पिछड़े वर्ग के साथ सवर्ण जातियों के वह लोग भी आते हें जिसका किसी भी द ा में मानसिक अथवा आर्थिक भोशण हुआ है।"[२९]

इनके मत से सहमत नहीं हुआ जा सकता 'दलित' के अन्तर्गत वे ही जातियां है जिसे परम्परा से 'अछूत' समझा गया है जिसे सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, भाारीरिक सभी दृश्टियों से भोशण का ि ाकार बनाया गया है और सबसे रेखांकित करने योग्य और हैरत अंगेज बात यह है कि उन्हें 'अछूत' समझा गया सवर्ण उसकी छाया से कतराते रहे हैं।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 10, October 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भले ही इस वर्ग को वैदिक काल में मुस्लिम काल में, गांधी युग में श्रीमती एनी बेसेंट द्वारा या संविधान में भिन्न-भिन्न नामों से पुकारा गया। किन्तु 'दलित' स्वयं को 'दलित' कहलाना ही पसन्द करते हैं।

'हरिजन' भाब्द जाति व्यवस्था में निहित ऐतिहासिक अन्याय की चेतना को सवर्ण दृश्टिकोण से व्यक्त करने वाला भाब्द है इसमें एक प्रकार से प चाताप का भाव छुपा हुआ है। जबकि 'दलित' करूणा या प चाताप को नहीं बल्कि बेवजह दमन व अपमान का ि ाकार होने के स्वभाविक रोश को व्यक्त करता है। इस प्रकार दलित भारतीय समाज व्यवस्था और मनुवादी ब्राह्मणवाद का ि ाकार वह भोाशित वर्ग है, जिसके साथ अनेक अमानवीय संत्रास मात्र दलित्व के कारण जन्म से ही जुड़ जाते हैं।

वस्तुतः दलित व भोाशित वर्ग से तात्पर्य एक ऐसे वर्ग समूह या जाति वि ोश से है जिसके धन सम्पत्ति, अधिकार एवं श्रम आदि का हरण किसी अन्य सत्त, भाक्ति सम्पन्न वर्ग या जाति के द्वारा कर लिया गया है। अन्तः दलित मानवीय प्रगति में सबसे पीछे पड़ा हुआ और ढकेला गया सामाजिक वर्ग है, जो जातियां हजारों वर्शों से भोाशण अत्याचार और अन्याय को सहती रही और उनके मुंह से चीख तक नहीं निकली वहीं जातियां आज अपनी चीख छटपटाहट और आक्रो ा को आवाज़ देने लगी है और सबसे बड़ी बात तो यह है कि आज उनकी आवाज़ सुनी भी जा रही है।

संदर्भ

1. दलितों में रूपान्तरण की प्रक्रिया, नरेन्द्र सिंह पृ० सं० ६
2. संस्कृत भाब्दार्थ कौस्तुम-चतुर्वेदी द्वारिका प्रसाद भार्मा, पृ० सं०-५२४
3. संस्कृत हिन्दी इंग्लि ा को ा- सं० सूर्यकान्त, पृ०सं०-२६५
4. दलितों में रूपान्तरण की प्रक्रिया, नरेन्द्र सिंह पृ० सं० ६-७
5. दलित साहित्य चिन्तन के विविध आयाम- सं० डॉ० एन० सिंह, पृ० सं०-१८
6. हिन्दी पर्यायवाची भाब्दको ा-भोलानाथ तिवारी, पृ० सं० २६५
7. दलितायन- अंवतिका प्रसाद मरमट, पृ० सं०-२
8. मानक हिन्दी को ा खण्ड-३ सं० श्री रामचन्द्र वर्मा, पृ० सं०-३५
9. संस्कृत हिन्दी को ा- वमन ि ावराम आप्टे, पृ० सं०-४५
10. उच्चतर हिन्दी को ा- डॉ० हरदेव बाहरी, पृ० सं०-१३६
11. वृहद अंग्रेजी हिन्दी को ा-प्रथम भाग डॉ० हरदेव बाहरी, पृ० सं०-५०४
12. मानक अंग्रेजी-हिन्दी को ा-सत्य प्रका ा, पृ० सं०-३६२
13. दलितों में रूपान्तरण की प्रक्रिया, नरेन्द्र सिंह, पृ० सं०-७
14. संक्षिप्त हिन्दी भाब्द सागर, सं० रामचन्द्र, पृ० सं०-४६८
15. दलित साहित्य चिन्तन के विविध आयाम- सं० डॉ० एन० सिंह, पृ० सं०-१८
16. दलित साहित्य चिन्तन के विविध आयाम- सं० डॉ० एन० सिंह, पृ० सं०-१८
17. दलितायन-अंवतिका प्रसाद मरमट, पृ० सं० -७, ८, ९, १०
18. दलितों में रूपान्तरण की प्रक्रिया, नरेन्द्र सिंह, पृ० सं० -६
19. दलितायन-अवंतिका प्रसाद मरमट, पृ० सं०- ४
20. दलितायन-अवंतिका प्रसाद मरमट, पृ० सं०- ४

21. दलित साहित्य चिन्तन के विविध आयाम- सं० डॉ० एन० सिंह, पृ० सं०-६२
22. दलितायन- अवंतिका प्रसाद मरमट, पृ० सं० १२-१३
23. लोक ासन समाचार-पत्र, २ जून, १९९३, जयपुर, रत्नकुमार साम्भारिया।
24. साप्ताहिक नागसेन मेजर मधुकर भोण्डे, २१ मार्च, १९९४, चन्दन नगर
25. प्रज्ञा साहित्य, कमले वर, मार्च-जून १९९५ अंक ९-१०, पृ० २
26. दलित साहित्य आन्दोलन डॉ० चनद्रकुमार बरठे, पृ० ६७
27. दलित साहित्य आन्दोलन, डॉ० चन्द्रकुमार बरठे, पृ० ६८
28. प्रज्ञा साहित्य-पुरुशोत्तम सत्य प्रेमी, मार्च- जून १९९५ पृ० २७
29. ि ाखर की ओर-सं० डॉ० एन० सिंह-३३१